



देश के हर नगर व ग्रामांचल में

दैनिक निर्दलीय को प्रतिनिधि चाहिए

पत्रकारिता के साथ सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक-अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।

संपर्क करें- 91 8839797448/942443401

निर्दलीय प्रकाशन

फ ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

भारतीय बहादुर कैप्टन स्मित मच्छर

वर्ष-५४/१६ अंक- ८९

भोपाल ९ अक्टूबर, डाक १० अक्टूबर २०२६

भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित

पृष्ठ -८

मूल्य १+१/- (संप्रेषण/स्वैच्छिक)

दैनिक निर्दलीय

साप्ताहिक निर्दलीय

और मासिक निर्दलीय

अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट

www.nirdaliya.comपर उपलब्ध

विधि: पहले उबत लिंक पर जाएं फिर क्लिक करें

e-paper, इसके बाद थंबक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।

साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

लोगों के दिलों में अंधेरा छाया है। खुशी के दिये जाने से क्या होगा?

भारतीय चुनाव आयोग द्वारा शुरू की गई विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत १३ करोड़ मतदाताओं के नाम काटे जाने के बाद विपक्षी दलों ने जो आपत्तियां उठाई थीं और इंडियन एक्सप्रेस द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार गुप्ता के दो सहयोगी चुनाव आयुक्तों को दरकिनार कर लिए गए निर्णयों का पर्दाफाश किए जाने के बाद जेन जी समूह द्वारा गठित कॉकरोच जनता पार्टी ने भी विपक्ष के सुर में सुर मिलाए जिससे मामला रोचक हो गया।

ज्ञातव्य है कि देश में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव कागजी मतपत्रों के जरिए कराए जाते थे किंतु वर्ष २००४ में हुए १४वें लोकसभा चुनाव से मतपत्रों के स्थान पर यह प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के हवाले कर दी गई। विधानसभा चुनावों तथा पंचायतों और स्थानीय शहरी निकायों, पंचायत समितियों और जिला परिषद के चुनावों में भी यही प्रक्रिया अपनाई जाने लगी। यद्यपि आज भी राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनावों के साथ ही राज्य सभा और विधान परिषदों के चुनाव में मतपत्रों का ही उपयोग किया जाता रहा है किंतु इन चुनावों को लेकर विपक्ष का विरोध कभी सामने नहीं आया किंतु ५४३ लोकसभा सीटों पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (इवीएम) द्वारा मतदान अनिवार्य किए जाने के बाद इस प्रक्रिया के विरुद्ध आवाज उठाई जाती रही है। इसके बावजूद केंद्र सरकार इवीएम प्रणाली को निष्पक्ष बताती है।

इवीएम प्रणाली लागू किए जाने के बाद अलग-अलग नामों से या मृत अथवा अनुपस्थित मतदाता के नाम पर फर्जी वोट डाले जाने की घटनाओं पर रोक लगी तथा चुनाव परिणाम भी जल्द आने लग किंतु चुनाव आयोग द्वारा गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया शुरू किए जाने के बाद विपक्ष यह मुद्दा सर्वोच्च न्यायालय तक ले गया। इस प्रक्रिया को लेकर चुनाव आयोग के कई फैसले और समूची प्रक्रिया फिलहाल कटघरे में है और मुख्य चुनाव आयुक्त विपक्ष द्वारा लगाए गए आरोपों एवं समाचार माध्यमों द्वारा उठाए गए मुद्दों का संतोषजनक जवाब नहीं दे पा रहे हैं। यही नहीं जब विपक्षी दल और कॉकरोच जनता पार्टी के सदस्य आयोग की मतदाताओं के नाम हटाए जाने की प्रक्रिया को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हैं तो केंद्र सरकार ही नहीं राज्यों में भाजपा एवं उसके सहयोगी दलों द्वारा संचालित सरकारें आंदोलनकारियों के दमन पर उतारू हो जाती हैं। इस कारंवाई के तहत पुलिस अपनी झूटी के न्यूनतम तकाजों

अग्र विचार

विचार प्रवाह-२१२



कैलाश आदनी

को भी भूल जाती है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि नई दिल्ली में प्रदर्शनकारियों को ना तो जंतर-मंतर पर एकत्रित होने दिया जाता और ना ही उन्हें चुनाव आयोग के मुख्यालय के बाहर प्रदर्शन करने दिया जाता। गत दिवस विपक्षी दलों के ३०० से अधिक सांसदों ने कार्यकर्ताओं के साथ जब चुनाव आयोग के मुख्यालय तक जाने की चेष्टा की तो उन्हें आकाशवाणी भवन के सामने रोक दिया गया। यही नहीं विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने वहां

धरना देना आरंभ किया तो उनके विरुद्ध पुलिस ने तुरंत आपराधिक प्रकरण दर्ज कर आगे की कारंवाई शुरू कर दी। ज्ञातव्य है कि दिल्ली में जारी कॉकरोच जनता पार्टी और दिल्ली विज्ञवविद्यालय के छात्र संगठन आइसा द्वारा जंतर-मंतर जाने की चेष्टा की गई तो ना केवल पुलिस के सिपाहियों ने बल्कि अधिकारियों ने तक पत्रकारों के साथ बदतमीजी और बदसलुकी की। महिला पत्रकारों के साथ किए गए दुर्व्यवहार यहां तक कि एक बड़े पुलिस अधिकारी द्वारा यौन हमला किए जाने की वीडियो रिकॉडिंग के साथ थाने में प्राथमिकी दर्ज किए जाने का अनुरोध किया गया तो उन्हें थाने से भगा दिया गया और अगले दिन दिल्ली के उपराज्यपाल ने संबंधित पुलिस अधिकारी की पदोन्नति के आदेश जारी कर दिए।

विपक्षी दलों के प्रदर्शनों को लेकर सत्तारूढ़ दल भाजपा के नेताओं की बड़ी फजीहत हो रही है। इसका सामना करने हेतु प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पूरे मंत्रिमंडल, अन्य सांसदों और पार्टी के अध्यक्ष नितीन नवीन को लगा दिया है। मोदी के सत्ता की राजनीति में आने के २५ वर्ष व्यतीत होने तथा उनके जन्मदिन १७ सितंबर से पार्टी ने सेवा संकल्प अभियान शुरू करते हुए खुशी के दिए जलाए किंतु इस अभियान को जन समर्थन नहीं मिल रहा है। यद्यपि भाजपा की मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साधारण स्वयं सेवक से लेकर शिखर पर बैठे सरसंग चालक तक मोदी सरकार द्वारा घोषित ‘विकसित भारत २०४७’ का प्रचार करने में कोई कोताही नहीं बरत रहे हैं फिर भी पार्टी और संघ के अभियानों को जन समर्थन ना मिलने से जाहिर है कि चुनाव आयोग और भाजपा की सांठगांठ को दबाने के लिए पार्टी, संघ और सरकार को नए सिरे से रणनीति बनाना होगी।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-
*लोगों के दिलों में अंधेरा छाया है।
खुशी के दिये जाने से क्या होगा?*

पति राजेश की मौत से 42 वर्ष की बबीता तो जैसे बिखर कर रह गई परंतु आठ साल की बेटी और बारह साल के दो बच्चों के पालन पोषण के कारण उसने हिम्मत से कम लिया और राजेश की तेरहवीं के तुरंत बाद ऑफिस जाना शुरू कर दिया। कुछ दिनों बाद नन्द मीना आ गई उसे बबीता का सज संवर कर ऑफिस जाना



सुनीता शर्मा ‘सिद्धि’

बिलकुल पसंद नहीं आ रहा था सो तुरंत बोली- भाभी हमारे यहां विधवा महिला का इस तरह का रहन-सहन ठीक नहीं माना जाता।

बबीता ने कहा- दीदी मैं सधवा विधवा के दायरे से दूर रहकर अपने व्यक्तित्व को संभालना और संवारना चाहती हूं और हां यदि लोगों को दिखाने के लिए मैं बदरंग या सफेद कपड़ों में लिपटी उदास परेशान रहूंगी तो मेरे बच्चे भी खुश नहीं रहेंगे। मेरी नजर में औरत और पृथ्वी एक जैसी है यदि पृथ्वी पर

रंग-बिरंगे फल फूल हरे भरे वृक्ष नदी पहाड़ आदि ना हो तो वो पूरी तरह से धुमिल होकर बंजर दिखाई देगी। बस ऐसी ही स्थिति औरत की भी है यदि वह अपने को पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं रखेगी तो उसका तन मन दोनों निराश और निर्जीव हो जाएंगे।

मीना ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और दूसरे दिन वापस चली गई।

रात में नींद ना आने पर अतीत की स्मृतियों में गुम बबीता को अपनी व्यवहार कुशल और खुशमिजाज मौसी का चेहरा याद आ गया 4 वर्ष पहले मौसा जी का देहांत होने पर गांव में आसपास की महिलाओं द्वारा उनकी मांथे पर सजी लाल बिंदी और मांग का सिन्दूर पोछ डाला चूड़ियां तोड़ दी और तन के आभूषण भी उतरवा दिए। बबीता ने उन्हें ऐसा न करने के लिए समझाया परंतु किसी ने उसकी एक न सुनी। वेद शास्त्रों में मुखरित नारी द्वारा नारी के प्रति आज यह अमानवीय व्यवहार देखकर बबीता की आंखें भर आईं। इस समय बेवस मौसी की इच्छा को जानने समझने वाला वहां कोई नहीं था।

लगभग 3 साल बाद बबीता का मौसी से मिलना हुआ तो उनका निस्तेज चेहरा देखकर वह आश्चर्य चकित रह गई। 45 साल की उम्र में वह 65 साल की वृद्ध नजर आई। घोर निराशा में डूबा उनका व्यक्तित्व कुम्हला कर रह गया। बबीता उन्हें समझाते हुए बोली मौसी आप अच्छे ढंग से रहते हुए खुश रहना सीखिए मौसा जी के दिये हुए हर सुख साधन का उपयोग करिए। वो तन से नहीं तो क्या पर मन से तो सदैव आपके साथ रहेंगे ना!

बेटी में पहले की तरह हंसने बोलने लगूंगी या अच्छे ढंग से रहूंगी तो लोग क्या कहेंगे अरे तुम नहीं जानती कि यहां लोग तरह-तरह की बातें बनाकर इतने ताने देंगे कि उन्हें बर्दाश्त नहीं किया जा

कहानी मंगल कामना

सकता। अरे तो लोगों के कहने से क्या आप अपनी सारी आकांक्षाओं को मार देंगी मौसी ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने घर के कामकाज में व्यस्त हो गई। कुछ दिनों बाद मौसी की पड़ोसी सरला आंटी ने हर वर्ष की तरह इस बार भी वैभव लक्ष्मी की पूजा का आयोजन किया। सारी महिलाओं के साथ-साथ उन्होंने मौसी को बुलाया। मौसी भी हमेशा की तरह आगे बढ़ चढ़कर सारे कार्यक्रम की तैयारी में जुट गई। उन्होंने प्रसाद और पकवान बनाये और पूजा की तैयारी भी कर दी। कुछ समय बाद जब पूजा विधि का समय नजदीक आया तो सरला आंटी ने मौसी को कोई बहाना बनाकर पूजा स्थल से हटा दिया। लेकिन अन्य महिलाएं पूरे समय तक पूजा अनुष्ठान करती रही। सुंदर-सुंदर उपहार के साथ दक्षिणा भी भेंट की। पढ़ी-लिखी समझदार मौसी समझ गई की मेरे पति के न होने से सरला ने उन्हें वैभव लक्ष्मी की पूजा से विमुख कर दिया लेकिन प्रसाद और भोजन के साथ-साथ पूजा की सारी तैयारी तो मुझसे ही कराई थी तो अब पूजा स्थल से मुझे हटाना क्या उचित है, ? अंधविश्वास से भरी इस असीम वेदना को हृदय में छुपाए मानो स्वयं से पूछने लगी यदि सरला मुझे भी पूजा अर्चना में शामिल कर लेती तो कौन सा व्यवधान आ जाता ?जबकि मैं भी तो रोज इन्हीं सभी देवी देवताओं श्री गणेश श्रीगणेश लक्ष्मी ,शंकर ,पार्वती राम सीता ,राधा कृष्णा की पूजा करती हूं। अरे माँदिर की घंटी की आवाज तो सबके लिए बराबर है तो फिर सधवा विधवा के नाम पर ये रूढ़िवादी सोच की दीवार क्यों ? पूजा पाठ के नाम पर किसी भी नारी से भेदभाव करने , दिल दुखाने या उसे अपमानित करके की गई पूजा क्या भगवान स्वीकार करेंगे। शायद कभी नहीं। बबीता ने मौसी की इस पीढ़ा को समझते हुए यह निर्णय लिया कि वह उनके जैसी स्थिति अपने ऊपर कदापि नहीं आने देगी। अरे मैं वो गीली लकड़ी नहीं जो गल सड़कर रह जाऊं। कुछ समय बाद फोन की घंटी ने बबीता के विचारों की शृंखला तोड़ दी। हेलो मैं सुजाता बोल रही हूं तुम शाम 7.00 बजे कमला के घर आ जाना आज उसके यहां वैभव लक्ष्मी की पूजा है। परंतु उसने मुझे तो नहीं बुलाया (बबीता ने आश्चर्य से कहा) अरे वो तो तुम्हारी प्रिय सहेली है (सुरेखा ने पुनः कहा) बबीता अपने को ना बुलाने का मवाजब अब समझ चुकी थी।

शाम 5 बजे जब बबीता घर पहुंची तो देखा सुजाता उसके दोनों बच्चों के साथ खेल रही थी चाय नाश्ता करने के बाद बबीता ने कोई विशेष बात नहीं की। क्या हुआ तुम इतनी गंभीर मुद्रा में क्यों बैठी हो क्या ऑफिस में बहुत काम था या कोई और बात (सुजाता ने पूछा), नहीं तो परंतु मैं नारी द्वारा नारी पर जबरदस्ती थोपी गई कुप्रथाओं के विषय में सोचती हूं तो बहुत तकलीफ होती है। तुम बताओ सुजाता कि राजेश की मृत्यु के बाद क्या मैं अपनी जिम्मेदारियों को नहीं उठा रही ? यह कैसी बातें करती हो अरे तुमने तो पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना दायित्व अच्छे ढंग से संभाला है, (सुजाता ने प्रशंसा की)। लगभग 1 हफ्ते बाद सुजाता ने माता पार्वती के पूजन में 21 सुहागन महिलाओं को बुलाया जिसमें बबीता को भी शामिल किया। सुजाता ने विधि विधान से पूजा अनुष्ठान कर सभी महिलाओं के अतिरिक्त बबीता को भी हल्दी कुमकुम का तिलक लगाकर सुहाग का सामान दिया तो सुजाता की सासू मां को ये बिल्कुल अच्छा नहीं और बोली यह तुम क्या कर रही हो क्या तुन्हें अपनी परंपराओं की बिल्कुल परवाह नहीं। अरे शुभ या मंगल कार्यों में विधवा की उपस्थिति ठीक नहीं। मां यह सब व्यर्थ की बातें हैं। अरे जो परंपराएं स्वस्थ मानसिकता में बाधा पैदा करें तो उन्हें जड़ से काटने में ही भलाई है और मेरी नजर में बबीता सुहागन ही है क्योंकि राजेश का सानिध्य तो उसके जीवन में पूरी तरह से रस बच बस चुका है। दो बच्चे ,घर परिवार सब उसके पति का दिया हुआ ही तो है यानी वो जीवित थे तब भी बबीता अच्छे से रही और उनके मरने के बाद भी उसे इस रूप में रहना चाहिए क्योंकि जीवित या मृत्यु के बाद भी पति का नाम पत्नी और बच्चों से कभी अलग नहीं होता तो फिर सधवा विधवा के नाम पर पत्नी का बंटवारा क्यों ? मां ऐसा सोचना और करना गलत है। और मैं तो इस बात के लिए बहुत खुश हूं कि बबीता जैसी स्वाभिमानी महिलाएं पूरे आत्मविश्वास के साथ समाज में सिर उठाकर जी रही है। मां आप बताइए बबीता की इस पूजा पाठ में शामिल होने से कौन सा अमंगल हो गया और फिर किस शास्त्र में लिखा है की पत्नी केवल पति के लिए ही सजे संवरे। अरे उसकी स्वयं की इच्छा है कि वह कैसे भी रहे। मैं यहां पर आई सभी अतिथि महिलाओं को बता दूं कि हम औरतों ने स्वयं की इच्छा से श्रृंगार साधनों का उपयोग किया था ना कि पुरुष या पति के लिए। मेरा मानना है कि जब पुरुष/पति ने महिला को प्रथम बार श्रृंगार के रूप में देखा तो वह उसकी प्रशंसा करने लगा होगा और इसी प्रशंसा से पुलकित महिलाएं सजने संवरने लगी। शायद तभी से हमारे समाज में इन श्रृंगार साधनों को पति के नाम पर सुहाग चिन्हों की श्रेणी में रख दिया। मां जब कभी हम मांगलिक कार्यों के विषय में कुछ करें या सोचें तो हमें सबसे पहले बबीता जैसी महिलाओं और उनके बच्चों के

लिए भी मंगल कामनाएं करनी चाहिए। और जो बात आप बबीता के लिए कह रही है तो कहीं ऐसे हालात भरे संग हुए तो क्या आप मुझे भी इस कुप्रथा की सोच के साथ जीने के लिए मजबूर करेंगी , ?

अरे चुप.... हो जा....इस पूजा पाठ में ऐसी अपशकुन की बातें मत कर(सासू मां नाराज होते हुए बोली)। मां मैं तो बस यही बताना चाहती हूं कि जब मौत जिंदगी का चक्र हमारे हाथ में है ही नहीं तो फिर क्यों बबीता जैसी अन्य महिलाओं के साथ पक्षपात का व्यवहार करें? शुभ अशुभ शकुन अपशकुन की सोच क्यों अपने मन में लाएँ अरे रूढ़िवादी क्रियाकलापों से ईश्वर की कृपा कभी नहीं मिलती।

ओ सुजाता तुमने सही कहा वास्तव में हमें बिना किसी भेदभाव के धार्मिक कार्यों में भी सभी की भागीदारी सुनिश्चित कर अंधविश्वास को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। आगुंतक महिलाओं ने सुजाता की बात का समर्थन करते हुए प्यार से बबीता की तरफ देखा और हल्दी कुमकुम का तिलक लगाकर उसे आशीष देते हुए अपने-अपने घर चली गई। सुजाता ने भी मुदित मन से बबीता को अपने हृदय से लगा लिया।

रचनाएं आमंत्रित हैं

नई दिल्ली से प्रकाशित

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

‘निर्दलीय’

नवंबर माह के आरंभ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक का विषय है –

चुनाव प्रक्रिया कितनी निष्पक्ष?

(संदर्भ: विपक्षी एवं जेन जी के प्रदर्शन)

इस विशेषांक में सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिकाएं, विपक्षी दलों एवं जेन जी द्वारा किए जा रहे प्रदर्शन पर केंद्रित अपनी मौलिक और अप्रकाशित समसामयिकता से जुड़े आलेख/समालोचना, संस्मरण, कहानी, लघुकथाएँ, गीत, गुज़ल, कविताएँ, २० अक्टूबर तक सादर आमंत्रित हैं। स्वीकृत रचनाओं की सूचना दी जाएगी-

कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक

ईमेल-nirdaliyadaily@gmail.com

वाट्सएप—

९४२४४४३४०१, ८८३९७९७४४८